

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

प्रदूषण पर ज्यादा कर

वित्त मंत्री अरुण जेटली ने कहा है कि प्रदूषण फैलाने वाले उत्पादों पर जीएसटी की दर अधिक हो सकती है।

शनिवार, 15 अक्टूबर 2016, लखनऊ, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण

www.livehindustan.com

वर्ष 21, अंक 238, 28 पेज+अनोखी, मूल्य ₹ 3.00, आश्विन, शुक्ल पक्ष

लखनऊ

आज का दिन

हिन्दुस्तान

लखनऊ • शनिवार • 15 अक्टूबर 2016 04

चंद्रमा से आज होगी 'अमृत' की बारिश

दोपहर 1:26 बजे से लगेगी पूर्णिमा

15 अक्टूबर को पूर्णिमा दोपहर 1:26 बजे से शुरू होगी जो अगले दिन 16 अक्टूबर को सुबह 9:53 बजे तक रहेगी।

16 कलाओं से युक्त है चंद्रमा, अमृत की होती वर्षा

आश्विन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन चंद्रमा अपनी पूरी 16 कलाओं से युक्त होता है और इस दिन चंद्रमा की चांदनी अमृत से युक्त होती है। भगवान श्री कृष्ण ने 'रास लीला' की थी। इसलिए इसे रास पूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन प्रातः स्नान करके भगवान श्री कृष्ण या श्री विष्णु जी या अपने इष्ट देव का पूजन अर्चना करना चाहिए और उपवास रखना चाहिए। इस दिन रात में गाय के दूध की खीर बनाकर उसमें घी, चीनी मिलाकर अर्ध रात्रि को भगवान को भोग लगाकर खीर को चांदनी रात में रखना चाहिए। ऐसा करने से चंद्रमा की किरणों से अमृत प्राप्त होता है और अर्द्ध रात्रि में चंद्रमा को भी अर्घ्य देना चाहिए।

एस.एस. नागपाल, ज्योतिषाचार्य



शरद पूर्णिमा में समाप्त होते हैं बारिश से पनपे बैक्टीरिया

इस परिवर्तन का एक पहलू और दिखता है कि वर्षा ऋतु में शरीर व त्वचा पर बैक्टीरिया से तरह-तरह के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। तो बैक्टीरिया पर्यावरण में निरंतर पहुंचती रहते हैं और आसमान में भी मौजूद रहती हैं। बारिश की बूंदों के साथ जमीन पर आ जाते हैं और रोग उत्पन्न करते हैं।

1- शरद ऋतु परिवर्तन काल जिस दिन पूर्ण चन्द्र दिवस अथवा शरद पूर्णिमा होती है चंद्रमा का पृथ्वी के सबसे नजदीक आने व पूर्ण चन्द्र होने से सूर्य की परावर्तित किरणों के कारण तमाम रोगों के दूर होने की प्रक्रिया व बैक्टीरिया समाप्त होने से वातावरण शुद्ध हो जाता है।

2- शरद पूर्णिमा के दिन के पश्चात शीतकालीन ऋतु का प्रवेश हो जाता है और धीरे धीरे ठंडक बढ़ने लगती है।

3- शरद पूर्णिमा के रात्रि में

महिलाओं द्वारा लक्ष्मी का विशेष पूजन किया जाता है।

4- शरद पूर्णिमा की रात्रि के पश्चात सुबह स्नान आदि के पश्चात महिलायें और लड़कियां नए वस्त्र पहन कर सूर्य को खीर व मीठे भोजन को चढ़ाती हैं और दिन भर व्रत रहती हैं। इससे इनके शरीर में एक तरफ विटामिन-डी जहां मिलता है वही दूसरी तरफ व्रत से शरीर में स्फूर्ति व शक्ति भी निरोगी होने व अच्छे विचारों से आ जाती है।



डा. भरतराज सिंह
निदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट
साइंसेज, और प्रभारी वैदिक विज्ञान
केन्द्र, लखनऊ